



# REVIEW OF RESEARCH

ISSN: 2249-894X

IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF)

VOLUME - 14 | ISSUE - 6 | MARCH - 2025



## जैव विविधता संरक्षण में स्थानीय पक्षियों की भूमिका का अध्ययन

डॉ. खुशबू

जे.एल.एन. एम. पी.जी. कॉलेज, बाराबंकी, उत्तर प्रदेश.

प्रो. सीता राम सिंह

प्राचार्य, जे.एल.एन. एम. पी.जी. कॉलेज, बाराबंकी, उत्तर प्रदेश.

### सारांश (Abstract):

यह शोध पत्र विकासात्मक गतिविधियों के कारण जैवविविधता - विविधता पारिस्थितिकी -पर पड़ने वाले प्रभाव का विश्लेषण करता है। जैव तंत्र का एक महत्वपूर्ण घटक है, जो प्राकृतिक क्षेत्र में पाए जाने वाले जीव-जंतुओं और पादपों की प्रजातियों की विविधता को दर्शाती है। हालाँकि, नगरीकरण, औद्योगिकीकरण, उन्नत कृषि, जनसंख्या वृद्धि, आवासों का विनाश, अवैध शिकार, प्रदूषण, और नई प्रजातियों के प्रवेश जैसी विकासात्मक गतिविधियों के कारण जैवविविधता का तेजी से हास हो रहा -



है। यह अध्ययन इन गतिविधियों के पर्यावरणीय प्रभावों का विश्लेषण करते हुए संकटग्रस्त और विलुप्तप्राय प्रजातियों की पहचान करता है। इसके लिए डेटा संग्रह, साक्षात्कार और क्षेत्रीय अवलोकन पद्धतियों का उपयोग किया गया है। शोध से पता चला है कि विकास और प्रगति की होड़ में मानव ने प्राकृतिक संसाधनों का अत्यधिक दोहन किया है, जिसके परिणामस्वरूप कई प्रजातियाँ संकटग्रस्त हो गई हैं। इसके संरक्षण के लिए जागरूकता, पर्यावरणअनुकूल नीतियों-, और सतत विकास उपायों को अपनाने की आवश्यकता है।

**मुख्य शब्द:** जैव-विविधता, विकास, विलुप्तप्राय जीव, प्राकृतिक संसाधनों का दोहन, पर्यावरण का विनाश, जैव-विविधता का हास।

### प्रस्तावना (Introduction):

पृथ्वी असंख्य पशुपक्षियों-, पेड़पौधों और वनस्पतियों का आवास स्थल है और अब तक ज्ञात एकमात्र ऐसा ग्रह है - जंतु एक-जहाँ जीवन संभव है। पृथ्वी पर मानव सहित अनेक जीव जटिल पारिस्थितिकी तंत्र का निर्माण करते हैं, जिसमें सूक्ष्म

एककोशिकीय जीवों से लेकर विशाल स्थलीय हाथी और जलीय व्हेल तक परस्पर आश्रित हैं। इस प्रकार, किसी भी जीव के विनाश या विलुप्ति का प्रभाव अन्य जीवों पर पड़ता है, जिससे पारिस्थितिक संतुलन बिगड़ता है। मानव ने विज्ञान और प्रौद्योगिकी में अभूतपूर्व प्रगति की है, जिसके परिणामस्वरूप वह चाँद तक पहुँच गया है और अन्य ग्रहों पर जीवन की खोज में लगा हुआ है। इस विकास यात्रा में मानव ने प्राकृतिक संसाधनों का भरपूर उपयोग किया, लेकिन आधुनिक समय में यह दोहन आवश्यकता से अधिक होकर लालच में बदल गया है। प्रारंभिक मानव प्रकृति के निकट और सीमित आवश्यकताओं के साथ जीवन यापन करता था, जबकि आधुनिक मानव ने औद्योगिकीकरण, नगरीकरण और वैश्विक विकास की होड़ में पर्यावरण पर गहरा प्रभाव डाला है। विकासात्मक गतिविधियों के कारण पृथ्वी पर जैव-विविधता का हास तेजी से हो रहा है। जैवविविधता न केवल पारिस्थितिकी संतुलन बनाए रखने में सहायक है, बल्कि यह औषधियों, सौंदर्य प्रसाधनों, आवास, और अन्य आवश्यकताओं की पूर्ति में भी उपयोगी है। वर्तमान में कई जैवविविधता हॉटस्पॉट्स भी विकास के दबाव में संकटग्रस्त हो गए हैं।

जैवविविधता हमारे अस्तित्व और सतत विकास के लिए अनिवार्य है। इसके संरक्षण के लिए जागरूकता, उचित नीतियों और सतत विकास के उपायों की आवश्यकता है, ताकि आने वाली पीढ़ियों के लिए यह प्राकृतिक धरोहर सुरक्षित रह सके। यह शोध पत्र विकासात्मक गतिविधियों के कारण जैवविविधता पर पड़ने वाले प्रभावों का विश्लेषण करता है और इसके संरक्षण के लिए आवश्यक रणनीतियों की पहचान करता है।

### साहित्य पुनरावलोकन (Literature Review):

#### पुस्तकें:

- **पर्यावरण अध्ययन – भरूचा, इराक (2015):** यह पुस्तक जैव-विविधता के उपयोग, संरक्षण (इन-सीटू और एक्स-सीटू), और पर्यावरण प्रदूषण के सामाजिक मुद्दों पर विस्तृत जानकारी प्रदान करती है।
- **पारिस्थितिकी और पर्यावरण – ओझा, एस.के. (2017):** इसमें पारिस्थितिकी तंत्र, जैव-विविधता के महत्व, हास के कारण, और पर्यावरणीय आंदोलनों (जैसे- चिपको, अण्डाको) पर चर्चा की गई है।
- **जनसंख्या विस्फोट और पर्यावरण – व्यास, हरिश्चंद्र एवं व्यास, कैलाशचंद्र (1995):** यह पुस्तक जनसंख्या वृद्धि, औद्योगिकीकरण से उत्पन्न पर्यावरणीय असंतुलन और संरक्षण उपायों पर केंद्रित है।

#### शोध पत्र और रिपोर्टें:

- **प्रोटेक्टेड प्लेनेट रिपोर्ट 2024– यूएनईपी-डब्ल्यूसीएमसी और आईयूसीएन (2024):** यह रिपोर्ट वैश्विक स्तर पर संरक्षित क्षेत्रों की वर्तमान स्थिति और 2030 तक भूमि और समुद्र के 30% हिस्से की सुरक्षा की प्रगति का आकलन करती है।
- **आईयूसीएन रेड लिस्ट ऑफ थ्रेटेड स्पीशीज – आईयूसीएन (2024):** यह डेटाबेस संकटग्रस्त प्रजातियों की स्थिति का आकलन करता है, जो जैव-विविधता संरक्षण के लिए महत्वपूर्ण जानकारी प्रदान करता है।

#### वेबसाइट्स:

- **यूएनईपी (संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण कार्यक्रम):** वैश्विक पर्यावरणीय मामलों में नेतृत्व प्रदान करता है और सतत विकास को प्रोत्साहित करता है।

- **आईयूसीएन (प्रकृति संरक्षण के लिए अंतर्राष्ट्रीय संघ):** प्रकृति संरक्षण और सतत उपयोग को बढ़ावा देने के लिए विज्ञान, नीति और कार्रवाई को एकीकृत करता है।
- **सीबीडी (जैव-विविधता पर सम्मेलन):** जैव-विविधता के संरक्षण, सतत उपयोग, और लाभों के न्यायसंगत वितरण को प्रोत्साहित करता है।

### शोध पद्धति (Research Methodology):

**अध्ययन क्षेत्र:** यह अध्ययन उत्तर प्रदेश के चार जिलों के निम्नलिखित गाँवों में किया गया है:

1. **आजमगढ़:** पवई, चकसेवा, जमुहट, दरीकपुर गाँव।
2. **अंबेडकर नगर:** कन्नुपुर, अमोला बुजुर्ग, अरई, सिरीपुर गाँव।
3. **फैजाबाद (अयोध्या):** शिवदासपुर, भिटारी, कुत्तुपुर, मिल्कीपुर गाँव।
4. **जौनपुर:** पट्टी, भिऊरा, रामपुर और दुमदुमा गाँव।

**शोध दृष्टिकोण:** यह गुणात्मक शोध है, जिसमें प्राथमिक और द्वितीयक दोनों स्रोतों का उपयोग किया गया है।

- **प्राथमिक स्रोत:**
  - **अवलोकन:** क्षेत्रीय अवलोकन के माध्यम से विकासात्मक गतिविधियों के प्रत्यक्ष प्रभावों का अध्ययन।
  - **साक्षात्कार:** प्रभावित समुदायों और विशेषज्ञों के साथ संरचित साक्षात्कार।
  - **केस स्टडी:** जैव-विविधता हास के विशिष्ट उदाहरणों का विश्लेषण।
- **द्वितीयक स्रोत:**
  - **साहित्य समीक्षा:** संबंधित पुस्तकों, शोध-पत्रों, और सरकारी दस्तावेजों का अध्ययन।
  - **ऑनलाइन संसाधन:** UNEP, IUCN, CBD आदि की रिपोर्टों का उपयोग।

### केस अध्ययन (Case Studies):

यह अध्ययन उत्तर प्रदेश के आजमगढ़, अंबेडकर नगर, फैजाबाद (वर्तमान नाम अयोध्या) और जौनपुर जिलों के ग्रामीण क्षेत्रों में किया गया है। यह मुख्य रूप से पक्षियों की घटती संख्या पर केंद्रित है। इसमें उन पक्षियों को शामिल किया गया है, जो वर्तमान में बहुत कम दिखाई देते हैं या विलुप्त होने की कगार पर हैं।

### महोक (Greater Coucal - *Centropus sinensis*)

महोक, जिसे भरजिलवा या महतुआ भी कहा जाता है, एक बड़ा, आकर्षक और छिपकर रहने वाला पक्षी है। इसका वैज्ञानिक नाम *Centropus sinensis* है और यह कुकू (Cuckoo) परिवार का सदस्य है। स्थानीय लोगों के अनुसार, यह मुख्य रूप से गन्ने के खेतों, झाड़ियों और सरपत के झुरमुटों में पाया जाता है। इसका रंग काला और चमकीला भूरा होता है, और इसकी आवाज़ "कुमकुम" या "हूप-हूप" जैसी होती है। महोक एक मांसाहारी पक्षी है, जो चूहे, बिच्छू, साँप, गिरगिट और टिड्डे खाकर कीटों की संख्या को नियंत्रित करता है, जिससे यह कृषि के लिए लाभकारी होता है। ग्रामीण इसे शुभ मानते हैं और

मौसम परिवर्तन का संकेतक समझते हैं, क्योंकि इसकी आवाज़ अक्सर बारिश से पहले सुनाई देती है। हालाँकि, कृषि रसायनों के बढ़ते उपयोग, प्राकृतिक आवासों के नष्ट होने और सरपत के झुरमुटों की कटाई के कारण इसकी संख्या में गिरावट आई है।

इसके संरक्षण के लिए प्राकृतिक आवासों की सुरक्षा, जैविक खेती को बढ़ावा देना और जागरूकता फैलाना आवश्यक है। अतः महोक पर्यावरण और कृषि के लिए एक महत्वपूर्ण पक्षी है, जिसे बचाने के लिए प्राकृतिक आवासों की रक्षा और रसायनों के नियंत्रित उपयोग की आवश्यकता है।

### गौरैया (House Sparrow - *Passer domesticus*)

गौरैया एक छोटा, चंचल और सामाजिक पक्षी है, जो पहले गाँवों और शहरों में आमतौर पर देखा जाता था। अध्ययन के अनुसार, पक्के मकानों के बढ़ते निर्माण और कीटनाशकों के अधिक उपयोग के कारण इसकी संख्या तेजी से घट रही है। पहले यह छप्पर, कच्चे मकानों और पेड़ों में घोंसला बनाती थी, लेकिन अब इसके लिए उपयुक्त स्थान कम हो गए हैं। गौरैया पर्यावरणीय संतुलन बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है, क्योंकि यह हानिकारक कीटों को खाकर फसलों की रक्षा करती है। इसके संरक्षण के लिए अधिक वृक्षारोपण, जैविक खेती को बढ़ावा देने और घरों में कृत्रिम घोंसले लगाने की आवश्यकता है। उत्तर प्रदेश सरकार 2010 से "गौरैया दिवस" मनाकर जागरूकता कार्यक्रम चला रही है, जिससे इस पक्षी के संरक्षण को बढ़ावा दिया जा सके। इसलिए गौरैया सिर्फ एक पक्षी नहीं, बल्कि हमारी प्रकृति और संस्कृति का अहम हिस्सा है। इसके संरक्षण के लिए जागरूकता फैलाना और पर्यावरण-अनुकूल जीवनशैली अपनाना आवश्यक है।

### टिटहरी (Red-wattled Lapwing - *Vanellus indicus*)

टिटहरी मुख्य रूप से खेतों, तालाबों के किनारों और खुले मैदानों में पाई जाने वाली पक्षी है। इसका वैज्ञानिक नाम *Vanellus indicus* है। यह पक्षी अपनी तेज़ आवाज़ और सतर्क स्वभाव के लिए जानी जाती है। अध्ययन के अनुसार, टिटहरी आमतौर पर ज़मीन पर ही अंडे देती है, खासकर खेतों, सूखे तालाबों के किनारों और खुले गड्ढों में। इसका प्रजनन काल मुख्य रूप से मई से जून तक होता है। हालाँकि, इसके अंडों को कई प्रकार के खतरे होते हैं, जैसे घास चरने वाले पशु, कृषि गतिविधियाँ और खेतों में फसल अवशेष जलाने की प्रक्रिया, जिससे अंडों और नवजात चूजों को नुकसान हो सकता है। इसके अलावा, तालाबों के किनारे रखे अंडे जानवरों द्वारा दबकर नष्ट हो सकते हैं। टिटहरी उड़ने के साथ-साथ तेज़ दौड़ने में भी सक्षम होती है और खतरा महसूस होने पर ऊँची आवाज़ में चेतावनी देती है। यह पक्षी अपने पर्यावरण के प्रति अत्यधिक सतर्क रहती है और पारिस्थितिक संतुलन बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

हालाँकि, बदलते पर्यावरण और मानवीय गतिविधियों के कारण टिटहरी के प्राकृतिक आवासों को नुकसान पहुँच रहा है। इसके संरक्षण के लिए जागरूकता फैलाना, कृषि गतिविधियों को नियंत्रित करना और इसके प्राकृतिक आवासों को सुरक्षित रखना आवश्यक है।

### हारिल पक्षी (Yellow-footed Green Pigeon - *Treron phoenicoptera*)

हारिल पक्षी, जिसे हरि पक्षी भी कहा जाता है, एक सुंदर हरा-पीला पक्षी है। इसका वैज्ञानिक नाम *Treron phoenicoptera* है। यह मुख्य रूप से घने बागों, जंगलों और हरे-भरे पेड़ों में पाया जाता है और पीपल, बरगद और बेल जैसे फलदार वृक्षों पर निवास करता है। हारिल पक्षी दिनभर पेड़ों पर रहता है और केवल पानी पीने के लिए ज़मीन पर उतरता है।

इसकी एक अनोखी विशेषता यह है कि यह जमीन पर उतरते समय अपने पैरों में लकड़ी या टहनी पकड़कर रखता है। इसका आहार फलों और छोटे बीजों पर आधारित होता है। लेकिन जंगलों की कटाई और अवैध शिकार के कारण इसकी संख्या तेजी से घट रही है। इसके संरक्षण के लिए प्राकृतिक आवास बचाना, वृक्षारोपण करना और अवैध शिकार पर रोक लगाना आवश्यक है।

### नीलकंठ (Indian Roller - *Coracias benghalensis*)

नीलकंठ एक सुंदर नीला-फिरोजी पक्षी है, जिसे भाग्य और शुभ संकेत का प्रतीक माना जाता है। यह खुले खेतों, जंगलों और हरे-भरे पेड़ों में पाया जाता है और आमतौर पर बिजली के तारों, खंभों या पेड़ों पर बैठकर कीट-पतंगों का शिकार करता है। स्थानीय लोगों के अनुसार, नीलकंठ की संख्या तेजी से घट रही है। इसके अस्तित्व के लिए बिजली के खुले तारों से करंट लगना, जंगलों की कटाई और प्राकृतिक आवास का नष्ट होना प्रमुख कारण हैं। इसके संरक्षण के लिए वृक्षारोपण, बिजली के तारों को सुरक्षित बनाना और कीटनाशकों के उपयोग को कम करना आवश्यक है। नीलकंठ न केवल पर्यावरण संतुलन बनाए रखने में सहायक है, बल्कि भारतीय संस्कृति का भी अहम हिस्सा है। अतः इसके संरक्षण के लिए आवश्यक कदम उठाना हम सभी की जिम्मेदारी है।

### बुलबुल (Bulbul)

बुलबुल एक सुंदर, रंग-बिरंगा और मधुर स्वर वाला पक्षी है, जो गाँवों, बागों, झाड़ियों और पार्कों में पाया जाता है। इसकी प्रमुख प्रजातियाँ लाल-कान वाली, लाल-विंग वाली और काले सिर वाली बुलबुल हैं। यह छप्पर, पेड़ों और झाड़ियों में घोंसला बनाती है और कीट-पतंगे, फल, अनाज तथा बीज खाकर पर्यावरणीय संतुलन बनाए रखती है। हालाँकि, अब बुलबुल की संख्या में तेजी से गिरावट आ रही है। स्थानीय लोगों के अनुसार, पहले यह गाँवों में आमतौर पर देखी जाती थी, लेकिन अब यह बहुत कम दिखाई देती है। इसके पीछे प्राकृतिक आवासों का नष्ट होना, अत्यधिक शिकार और पर्यावरणीय असंतुलन प्रमुख कारण हैं। कुछ स्थानों पर लोग मनोरंजन के लिए बुलबुलों को पकड़कर लड़ाने के लिए पालते हैं, जो कि एक अनुचित और अमानवीय प्रथा है। बुलबुल के संरक्षण के लिए प्राकृतिक आवासों की रक्षा, वृक्षारोपण को बढ़ावा देना और इस पक्षी के प्रति जागरूकता फैलाना आवश्यक है।

### चकोर (Chukar Partridge)

चकोर (*Alectoris chukar*) एक सुंदर और मधुर आवाज़ वाला पहाड़ी पक्षी है, जिसे सौभाग्य और प्रेम का प्रतीक माना जाता है। यह उत्तर भारत, नेपाल, पाकिस्तान और हिमालयी क्षेत्रों में पाया जाता है। यह पक्षी पहाड़ी और झाड़ीदार क्षेत्रों में रहता है और महुआ, आम, कीट-पतंगे तथा जंगली बीज खाता है। यह झाड़ियों में घोंसला बनाता है, और नर-मादा दोनों मिलकर अंडों की देखभाल करते हैं। हालाँकि, जंगलों की कटाई, प्राकृतिक आवासों के नष्ट होने और शिकार के कारण इसकी संख्या तेजी से घट रही है।

स्थानीय लोगों के अनुसार, पहले चकोर गाँवों के आसपास आमतौर पर देखा जाता था, लेकिन अब यह बहुत कम दिखाई देता है और विलुप्ति के कगार पर है। इसके संरक्षण के लिए प्राकृतिक आवासों को बचाना, अवैध शिकार को रोकना और वृक्षारोपण को प्रोत्साहित करना आवश्यक है। साथ ही, लोगों को इसके संरक्षण के प्रति जागरूक करना भी ज़रूरी है।

### कोयल (Asian Koel)

कोयल (*Eudynamys scolopaceus*) अपनी मधुर और सुरीली आवाज़ के लिए जानी जाती है और इसे वसंत और गर्मी का संदेशवाहक माना जाता है। यह भारत, पाकिस्तान, बांग्लादेश और दक्षिण पूर्व एशिया में पाई जाती है। कोयल अपने अंडे खुद नहीं सेती, बल्कि इन्हें कौवे के घोंसले में देकर उनकी देखभाल का कार्य कौवे पर छोड़ देती है। इसका रंग गहरा काला होता है, और इसकी लाल आँखें इसे अन्य पक्षियों से अलग बनाती हैं। यह घने पेड़ों, बागों और झाड़ियों में रहती है और कीट-पतंगे, फल, और अनाज खाकर पर्यावरणीय संतुलन बनाए रखती है।

ग्रामीण लोगों से बातचीत में पता चलता है कि अब कोयल की संख्या बहुत कम हो गई है, और उनकी आवाज़ अब कभी-कभी ही सुनाई देती है। इसके पीछे पेड़ों की कटाई, प्राकृतिक आवासों के नष्ट होने और कीटनाशकों के बढ़ते उपयोग को कारण माना जा रहा है। इसके संरक्षण के लिए वृक्षारोपण को बढ़ावा देना, प्राकृतिक आवासों की सुरक्षा करना और कीटनाशकों के उपयोग को नियंत्रित करना आवश्यक है।

### कठफोड़वा (Woodpecker)

कठफोड़वा अपनी तेज़ चोंच से पेड़ों पर ठकठक करने की आवाज़ और अनोखे घोंसले बनाने के लिए जाना जाता है। - यह भारत, पाकिस्तान, बांग्लादेश और दक्षिण पूर्व एशिया में पाया जाता है। कठफोड़वा अपनी मजबूत चोंच और लंबी, चिपचिपी जीभ से पेड़ों की छाल में छेद करके वहां छिपे कीटों को खाता है। इसके अलावा, यह फल, बीज, और पेड़ की गोंद भी खाता है। यह पक्षी पारिस्थितिकी तंत्र में कीट नियंत्रण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। कठफोड़वा घने पेड़ों, जंगलों और बागों में खोखले स्थान बनाकर घोंसला बनाता है, जो अन्य पक्षियों और छोटे जीवों के लिए भी आश्रय का काम करता है। इसकी मजबूत पूंछ इसे पेड़ की छाल पर टिके रहने में मदद करती है।

ग्रामीण लोगों का कहना है कि अब कठफोड़वा की संख्या में कमी आई है और इसकी आवाज़ अब कम सुनाई देती है। इसका मुख्य कारण पेड़ों की अंधाधुंध कटाई, प्राकृतिक आवासों का नष्ट होना और कीटनाशकों का बढ़ता उपयोग है।

### धनुषटोपी (Hornbill)

धनुषटोपी, जिसे स्थानीय भाषा में धनेश भी कहा जाता है, अपनी बड़ी, घुमावदार चोंच और उसके ऊपर मौजूद अनोखे कैस्क (हेलमेट जैसी संरचना) के लिए जानी जाती है। यह पक्षी भारत, दक्षिण पूर्व एशिया और अफ्रीका के घने जंगलों में पाया जाता है। भारत में मुख्य रूप से ग्रेट हॉर्नबिल (*Buceros bicornis*), इंडियन ग्रे हॉर्नबिल (*Ocyrceros birostris*), और राइनो हॉर्नबिल (*Buceros rhinoceros*) प्रजातियाँ देखी जाती हैं। धनुषटोपी मुख्य रूप से फलाहारी पक्षी है, जो अंजीर और अन्य जंगली फलों को खाता है, लेकिन कभी-कभी यह कीड़े-मकोड़े और छोटे सरीसृप भी खा लेता है। यह बीजों को दूर-दूर तक फैलाकर वनस्पति के विस्तार में मदद करता है और पारिस्थितिकी तंत्र में बीज वितरणकर्ता के रूप में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। धनुषटोपी ऊँचे, पुराने और घने पेड़ों में घोंसला बनाती है। मादा अंडे देने के बाद घोंसले के अंदर रहती है, जबकि नर बाहर से भोजन लाकर उसे खिलाता है। घोंसले का द्वार कीचड़ और फल के गूदे से सील कर दिया जाता है, जिसमें केवल एक छोटी दरार छोड़ी जाती है जिससे भोजन दिया जा सके। ग्रामीण और वनवासी लोगों के अनुसार, अब धनुषटोपी की संख्या में गिरावट आ रही है। इसके मुख्य कारण हैं - पुराने और ऊँचे पेड़ों की कटाई, शिकार, और आवास स्थलों का नष्ट होना। कुछ क्षेत्रों में कैस्क और पंखों के लिए भी इनका शिकार किया जाता है।

## गिद्ध (Vulture)

गिद्ध (Vulture) एक महत्वपूर्ण पर्यावरणीय पक्षी है, जो प्राकृतिक सफाईकर्मी की भूमिका निभाता है। यह मुख्य रूप से मृत पशुओं को खाकर वातावरण को स्वच्छ बनाए रखता है। गिद्धों की कई प्रजातियाँ होती हैं, जिनमें भारतीय उपमहाद्वीप में पाई जाने वाली सफेद पीठ वाला गिद्ध (White-rumped Vulture), लंबी चोंच वाला गिद्ध (Long-billed Vulture) और भारतीय गिद्ध (Indian Vulture) प्रमुख हैं। स्थानीय लोगों के अनुसार, सन् 2000 से पहले गिद्धों की संख्या बहुत अधिक थी, और वे अक्सर आम के बागों, पीपल और ऊँचे वृक्षों पर बैठते थे। गर्मी के मौसम में, जब गिद्ध आम के पेड़ों पर इकट्ठा होते थे, तो उनकी भारी संख्या के कारण पेड़ों की डालियाँ हिल जाती थीं और पके हुए आम गिरने लगते थे। गाँव के बच्चे इन आमों को इकट्ठा करके खाने का आनंद लेते थे। गिद्ध ऊँचे और सुरक्षित स्थानों जैसे पीपल के पेड़ों और ऊँची चट्टानों पर अपना घोंसला बनाते थे और वहीं अंडे देते थे। हालाँकि, अब गिद्धों की संख्या में भारी गिरावट आई है, और गाँवों में ये पक्षी दुर्लभ हो गए हैं। इनकी अनुपस्थिति के कारण मरे हुए पशु सड़कर दुर्गंध फैलाने लगे हैं, जिससे गंदगी और बीमारियों का खतरा बढ़ गया है। पहले, गिद्ध मृत जानवरों को खाकर पर्यावरण को स्वच्छ रखते थे, लेकिन अब लोगों को मरे हुए जानवरों को गड्ढा खोदकर दबाना पड़ता है।

गिद्धों की संख्या में गिरावट का मुख्य कारण डाइक्लोफेनाक दवा है, जिसका उपयोग पशुओं के इलाज में किया जाता था। मृत पशुओं को खाने पर यह दवा गिद्धों में विषाक्तता और किडनी फेलियर का कारण बनती थी। इसके अलावा, पर्यावरणीय असंतुलन, वन कटाव और भोजन की कमी भी उनके विलुप्त होने के कारक हैं। संरक्षण के लिए संरक्षण केंद्र स्थापित किए गए हैं, लेकिन प्राकृतिक आवासों का संरक्षण और जन जागरूकता आवश्यक है।

## चर्चा (Discussion):

यह अध्ययन उत्तर प्रदेश के आजमगढ़, अंबेडकर नगर, अयोध्या (पूर्व में फैजाबाद), और जौनपुर जिलों के ग्रामीण क्षेत्रों में पक्षियों की घटती संख्या पर केंद्रित है। महोक (Greater Coucal), गौरैया (House Sparrow), टिटहरी (Red-wattled Lapwing), हारिल (Yellow-footed Green Pigeon), नीलकंठ (Indian Roller), बुलबुल (Bulbul), चकोर (Chukar Partridge), कोयल (Asian Koel), और गिद्ध (Vulture) की आबादी में गिरावट पर्यावरणीय असंतुलन और पारिस्थितिकी तंत्र की स्थिरता को प्रभावित कर रही है।

### 1. प्राकृतिक आवासों का नष्ट होना और मानवजनित गतिविधियाँ:

पक्षियों की संख्या में गिरावट का मुख्य कारण प्राकृतिक आवासों का नष्ट होना है। महोक के आवास गन्ने के खेतों और झाड़ियों को कृषि रसायनों और सरपत की कटाई से खतरा है, जबकि नीलकंठ के लिए वनों की कटाई और बिजली के खुले तारों से करंट लगना मुख्य समस्याएँ हैं। यह परिणाम अन्य अध्ययनों से मेल खाता है जो शहरीकरण, वनों की कटाई, और कृषि विस्तार को पक्षियों के आवासों में कमी के लिए जिम्मेदार ठहराते हैं।

### 2. कृषि रसायनों और कीटनाशकों का प्रभाव:

कीटनाशकों और कृषि रसायनों के अत्यधिक उपयोग से गौरैया, महोक, और नीलकंठ जैसी प्रजातियाँ प्रभावित हुई हैं। ये रसायन इनके भोजन (कीट-पतंगों) को नष्ट करने के साथ-साथ इनके स्वास्थ्य को भी नुकसान पहुँचाते हैं। गिद्धों में

डाइक्लोफेनाक के कारण विषाक्तता से भारी गिरावट देखी गई है। यह परिणाम उन अध्ययनों का समर्थन करता है जो कीटनाशकों के प्रतिकूल प्रभावों को पक्षियों की मृत्यु दर से जोड़ते हैं।

### 3. शिकार और सामाजिक प्रथाएँ:

बुलबुल और चकोर की संख्या में कमी का एक कारण शिकार और पारंपरिक प्रथाएँ हैं, जैसे कि बुलबुल की लड़ाई और चकोर का शिकार। इसके अलावा, सांस्कृतिक महत्व के कारण नीलकंठ और महोक को भी पकड़ा जाता है। ये निष्कर्ष सांस्कृतिक धारणाओं और प्रथाओं के पारिस्थितिकी पर पड़ने वाले प्रभावों का समर्थन करते हैं।

### 4. पर्यावरणीय असंतुलन और पारिस्थितिकी तंत्र पर प्रभाव:

पक्षियों की घटती संख्या से पर्यावरणीय असंतुलन उत्पन्न हो रहा है। महोक और गौरैया की कमी से कीटों की संख्या में वृद्धि हो सकती है, जिससे फसलों को नुकसान हो सकता है। गिद्धों की अनुपस्थिति मृत पशुओं के सड़ने और बीमारियों के फैलने का कारण बन रही है। यह दर्शाता है कि पक्षी पारिस्थितिकी तंत्र में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

### 5. संरक्षण की आवश्यकता और संभावित उपाय:

इस अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि पक्षियों की घटती संख्या को रोकने के लिए निम्नलिखित संरक्षण उपाय आवश्यक हैं:

- **प्राकृतिक आवासों की सुरक्षा:** गन्ने के खेतों, झाड़ियों, और पेड़ों का संरक्षण।
- **जैविक खेती को बढ़ावा:** कीटनाशकों के उपयोग को कम करना।
- **सामाजिक जागरूकता:** स्थानीय समुदायों को पक्षियों के महत्व के बारे में शिक्षित करना।
- **कानूनी संरक्षण:** अवैध शिकार को रोकने के लिए सख्त कानून लागू करना।

### 6. भविष्य के अनुसंधान की संभावनाएँ:

भविष्य में इन पक्षियों की प्रजातियों पर जलवायु परिवर्तन, शहरीकरण, और अन्य पर्यावरणीय कारकों के प्रभावों का गहन अध्ययन आवश्यक है। इसके अलावा, संरक्षण प्रयासों की प्रभावशीलता का मूल्यांकन और जनसंख्या पुनरुद्धार के लिए स्थानीय समुदायों की भागीदारी को और विस्तार से समझने की आवश्यकता है।

### निष्कर्ष

इस अध्ययन से स्पष्ट होता है कि उत्तर प्रदेश में पक्षियों की संख्या में गिरावट के पीछे मुख्य कारण कीटनाशकों का बढ़ता उपयोग, आवास विनाश और जलवायु परिवर्तन हैं। विशेष रूप से महोक, गौरैया, और नीलकंठ जैसी प्रजातियाँ अधिक प्रभावित हो रही हैं, जो पारिस्थितिक संतुलन के लिए खतरनाक संकेत हैं। यह निष्कर्ष महत्वपूर्ण है क्योंकि ग्रामीण क्षेत्रों में बाग-बगिचों और हरियाली की अधिकता होती है, जो पक्षियों को आवास और भोजन प्रदान करती है, लेकिन शहरीकरण और आधुनिक जीवनशैली ने उनके पारंपरिक आवासों को प्रभावित किया है। उदाहरणस्वरूप, गौरैया जैसे पक्षी पारंपरिक घरों में घोंसला बनाते थे, परंतु आधुनिक निर्माण विधियों ने उनके लिए उपयुक्त आवास स्थानों को कम कर दिया है।

स्थानीय किसानों और समुदायों में जागरूकता की कमी भी पक्षी संरक्षण में बड़ी बाधा है। यदि समय पर प्रभावी कदम नहीं उठाए गए, तो इन प्रजातियों का अस्तित्व संकट में पड़ सकता है। इसलिए, पर्यावरण संरक्षण के लिए जागरूकता फैलाने, पारंपरिक निर्माण विधियों को बढ़ावा देने, और कीटनाशकों के नियंत्रित उपयोग को अपनाने की आवश्यकता है। इसके अलावा, पक्षियों के लिए सुरक्षित आवास सुनिश्चित करना आवश्यक है, ताकि हम मानव और प्रकृति के बीच संतुलित सहअस्तित्व को बनाए रख सकें।

भविष्य के शोध में पक्षियों के संरक्षण के लिए स्थानीय समुदायों की भागीदारी और सरकारी नीतियों की भूमिका का विश्लेषण करना महत्वपूर्ण होगा, जिससे टिकाऊ और प्रभावी संरक्षण रणनीतियाँ विकसित की जा सकें।

### 8. सन्दर्भ ग्रन्थ सूची) References):

1. वर्मा, पी. एस., & अग्रवाल, वी. के. (2010). *जैव विविधता और पर्यावरण संरक्षण*. एस. चंद पब्लिशर्स.
2. मिश्र, आर. (2009). *भारत में जैव विविधता: संरक्षण और प्रबंधन*. हिंदी माध्यम कार्यान्वयन निदेशालय.
3. व्यास, हरिशंकर, & व्यास, कैलाशचन्द्र. (1995). *जनसंख्या विस्फोट और पर्यावरण*. सत्साहित्य प्रकाशन.
4. ओझा, एस. के. (2017). *पारिस्थितिकी और पर्यावरण*. बौद्धिक प्रकाशन.
5. भारत सरकार. (2020). *पर्यावरणीय संकट और जैव विविधता संरक्षण की स्थिति*. पर्यावरण मंत्रालय.
6. सिंह, आर. (2021). *भारत में पक्षी संरक्षण: वर्तमान चुनौतियाँ और समाधान*.
7. Gadgil, M., & Guha, R. (1995). *Ecology and equity: The use and abuse of nature in contemporary India*. Routledge.
8. Singh, J. S., & Singh, S. P. (2017). *Forest ecosystems of the Himalaya: Structure, functioning, and impact of climate change*. Springer.
9. Rao, R. R. (1994). *Biodiversity in India (Vol. 1)*. Bisen Singh Mahendra Pal Singh.
10. Singh, S. P. (2002). Balancing the approaches of environmental conservation by considering ecosystem services as well as biodiversity. *Current Science*, 82(11), 1331-1335.
11. <https://www.ecoindia.com/bird-conservation>